

2
 मानव की रक्षा को सुनिश्चित करने की
 व्यवस्था को वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए वायु प्रदूषण
 के अलग-अलग निम्नलिखित विभागों ने अपने-अपने-अपने
 व्यक्त किया है। इसमें हार्कनेय की परिभाषा
 निम्न है - " वायु में ऐसे वाह्य तत्व की
 (गैसीय, कणीय) उपस्थिति जो मनुष्य के स्वास्थ्य
 को नुकसान पहुंचाने के लिए इतिकाल है वायु
 प्रदूषण कहलाता है।"

प्रकार से परिचित किया है। Air pollution is defined
 as limited to situation in which the outdoor
 ambient atmosphere contains materials in concn
 which are harmful to man and his
 surrounding environment. वायु प्रदूषण की परिभाषा Perkins
 Henry, Dr. Sarindra Singh, N.EERI (National Environment
 & Engineering Research Institute, गाँधी नगर, दिल्ली
 संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली 1972 में प्रकाशित -
 किया। जिसमें लिखा कि " 1970 के दशक के
 अंत तक विश्व के सभी उपस्थित सबसे बड़ी
 पर्यावरणीय समस्या त्रि: संकेत, कार्बन डाइऑक्साइड
 की थी।" उक्त प्रकार की अभिव्यक्ति Omkar
 Singh, V.K. Kumar, Dr. Jagdish Singh, ने Indian
 Urban Environment & Pollution में की है।
 अनुपम मिश्र द्वारा लिखित - " देश का पर्यावरण में

किसाई। यानि कि सीमा से अधिक गंध की मात्रा वायु में मिलने से उच्च वातिलक्षितत्व की वजह से आती है जो मानव स्वास्थ्य में सिर्फ खतरा है, वायु प्रदूषण है।

वायु प्रदूषक वायु में पाये जाने वाले अपांक्षित पदार्थों को वायु प्रदूषक कहते हैं, जिसका स्वरूप के प्रभाव का पता जाता है - जैसीय स्वरूप की कणिकीय स्वरूप।

① जैसीय प्रदूषक ऐसे प्रदूषक गंध स्वरूप में मिलते हैं। जैसीय वायु प्रदूषक का न कोई स्थायी आकार होता है न उनका कोई सीमित आयतन ही होता है, जिनके अणु प्रसरण की इसीमित गमता होती है, इसे कठोर गंध सम्मिलित है जिनमें निम्न दिखता आता है

प्रमुख जैसे

उत्पत्ति के स्रोत

- 1) कार्बन डाई ऑक्साइड, कार्बन मोनो ऑक्साइड -
- 2) सल्फर डाई ऑक्साइड हाइड्रोजन सल्फाइड
- 3) हाइड्रोकार्बन, नाइट्रोजेनोक्साइड हाइड्रोकार्बन
- 4) नाइट्रोजन - ऑक्साइड्स

- जीवाश्म ईंधनों, वाहनों से निरसृति से।
- जीवमृत जीवाश्म ईंधन से
- जीवाश्म ईंधनों के अपर्यय दहन से उत्पन्न।
- सूर्य कोशिकीय वायु प्रदूषण, अंतरिक्ष यानों के प्रयोग से
- वातावरण में, रेफ्रिजरेशन मशीन से
- सूती वस्त्र उद्योग के क्लिफि से उत्पन्न।
- पत्ता, तेल वादि से तप द्वारा विघ्नित गंध।

5) एल्लोरी - ज्यूरॉ कार्बन

6) म्लोडिन

7) अल्ट्राहाइड्स

2: → काशीय वायु प्रदूषक (4) वायुमंडल में विभिन्न प्रकार के काशीय प्रदूषक पाये जाते हैं, जो वायुमंडल में गिने जाते हैं, जैसे - इनका स्वरूप अति सूक्ष्म है (स्वरूप स्वयं में गिना जाता है, 0.001 मि.मी. (एक माइक्रोन) से कम व्यास वाले सूक्ष्म कण जो अधिक समय तक वायुमंडल में निलम्बित रह सकते हैं। एक माइक्रोन से अधिक व्यास वाले कण गुरुत्वाकर्षण के कारण नीचे की ओर चले जाते हैं। ये कोहरा, कुहासा आदि के साथ विद्यमान रहते हैं। 10 माइक्रोन से अधिक व्यास वाले कण शीघ्रता से अक्षयल की ओर चले जाते हैं जहाँ कारखानों की धूल रहती है, जिसे सुरोसाक कहा जाता है।

वायु प्रदूषक को जीवित एवं अजीवित प्रकारों में बांट कर अध्ययन किया जाता है, जीवित प्रकार में बैक्टीरिया, कवकजीवाणु (spores) आदि रहते हैं एवं अजीवित में धातु जनीत, अम्लीय पदार्थ एवं गैस प्राथमिक पदार्थ सम्मिलित होते हैं, गड्डीजन, नल्लोरो मल्लूरो अलसाध्य आदि।

वायु प्रदूषण के मुख्य स्रोत

वायु प्रदूषण के विभिन्न स्रोत हैं जिनके द्वारा वायु प्रदूषण - वातावरण में होता है, जिनमें हैं -

- 1) ताप विजली घर → वायु प्रदूषण का मुख्य स्रोत ताप विजली घर है, जिनमें ऊर्जा की उत्पत्ति हेतु कोयला का प्रयोग किया जाता है, इस ऊर्जा उत्पन्न

कारखानों में 1350 एवं 2000 ई. से वायु प्रदूषण का स्तर बढ़ रहा है।

क्रम में ताप निजली संयंत्रों से Fly ash, कार्बन
 तथा सल्फर डाइऑक्साइड निकलता है, ताप के कुछ
 छुनिन्का बिजली घर जैसे दिल्ली का सन्प्रसन्न ताप
 बिजली घर, पंजाब का मेटिडा स्थित ताप बिजलीघर
 काठि। पंजाब राज्य वायु प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार
 "यह बिजलीघर प्रतिदिन 240 से 360 टन तक
 वायु उगलता है। तथा इसका प्रभाव काठु-पाठ के
 उपारो एकडे अमीन मीफुसल पर पड़ता है। इन के
 कारण, नाक एवं खोंस के बी-रोग बढ़े हैं।"

② रासायनिक खाद के कारखाने → भारत में लगभग
 72 बड़े रासायनिक खाद कारखाने हैं जो इस प्रकार
 को उत्पादित करने के क्रम में अमोनिआ हाइड्रो
 कार्बोनेट एवं फॉस्फोरिक कार्बोनेट का
 निरूपण करते हैं। तमिलनाडु स्थित आरपी रासायनिक
 खाद कारखाने से अमोनिआ गैस को कोयले से
 उलान्त हो गठ है। साथ ही कार्बोनेट रासायनिक
 शीशे एवं पलासु जिले के अनेक उद्योगों से
 रासायनिक प्रदूषण में वृद्धि हुई है। पलासु जिले में
 रेहला स्थित कार्बोनेट कारखाने से सल्फ्यूरिक
 गैस की उत्पत्ति अधिक हुई है, जो वायु
 प्रदूषण को बढ़ा रहा है।

③ शुनी वस्त्र उद्योग → शुनी वस्त्र उद्योग के

वायु प्रदूषण फैलाने के रेशों को वायु में उड़ाने देते हैं, खास रोग को उत्पन्न करते हैं। कुम्हड़ स्थित K.E.M. Hospital के खर्चों के अनुसार 10-16% प्रदूषण को वायु प्रदूषण से आता है। वस्त्र उद्योगों में कई प्रकार के रासायनिक द्रव्य का प्रयोग होता है, जिससे वायु प्रदूषण बढ़ता है। मिट्टी के कणों का भाप-मैफा नैफता गैस, गंधक का अल्प क्लोरिन, क्लोरिन, डाइऑक्साइड आदि। कुम्हड़, 187 अर्ध 567 उद्योगों

④ जीवनोष्ण रासायनों का प्रयोग → पौधों की पुरवा हेतु कुछ कुछ जीव रासायनों का प्रयोग करते हैं, प्रयोग के फलस्वरूप रासायनों के अणु उपरी थूपटल आ मिलता है तथा तापमान अधिक होने के साथ ही वायुमय होकर वायुमय में प्रवेश कर आता है, जिससे वायु प्रदूषण बढ़ती है।

⑤ आवायात के साधनों से → आवायात के साधनों से भी वायु प्रदूषण अधिक बढ़ता है, इन साधनों से निकले जाने वाले धुंये में कार्बन-डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन आक्साइड, हाइड्रोकार्बन, अलडीहाइड, मिड, लेड आक्साइड रहता है, जो वायु प्रदूषण का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। भारत के पौधे नगरों में अन्य शहरों में भी सनादि वायु प्रदूषण

⑥ मलमलानों का विस्तार → मलमलानों की सनी व विस्तार